विचार बिन्दु

कर्म, ज्ञान और भक्ति- ये तीनों जहाँ मिलते हैं वहीं सर्वश्रेष्ठ पुरुषार्थ जन्म लेता है। -अरविंद

भारत में बेरोज़गारी : इस नज़र से भी देखें!

बेरोज़गारी भारतीय समाज की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है। आज़ादी के बाद से बनने वाली हर सरकार ने इस समस्या को दूर करने के, या कम करने के प्रयास किए हैं। लेकिन उन सब प्रयासों के बाद भी यह समस्या जस की तस बनी हुई प्रतीत होती है। भारतीय समाज में विद्यमान बेरोज़गारी का एक पक्ष यह भी है कि हमारे अधिकांश युवा रोज़गार को सरकारी नौकरी का पर्याय मानते हैं। अगर सरकारी नौकरी मिल गई तो वे बा-रोज़गार हो जाते हैं और जिन्हें सरकारी नौकरी नहीं मिल पाती है, वे ठीक-ठाक कमा लेने के बाद भी ख़ुद को बेरोज़गार ही मानते हैं। सरकारी नौकरी के प्रति ज़बर्दस्त आकर्षण का एक बड़ा कारण उसके द्वारा मिलने वाली सुरक्षा है। आप एक बार नौकरी में घुस गए तो फिर रिटायर होकर ही बाहर निकलेंगे। सरकारी नौकरी आपको काफी लम्बे समय, लगभग तीस-पैंतीस साल के लिए आश्वस्त कर देती है। न केवल इतने बरसों के लिए, इनके बाद भी पेंशन के रूप में आपको निश्चिंतता प्रदान करती है। स्व रोज़गार में यह सुविधा कहां? इसके अलावा, हमारे यहां जो व्यवस्था बन गई है उसके अनुसार एक बार सरकारी नौकरी पा लेने के बाद इस बात की कोई ख़ास ज़रूरत नहीं रह जाती है कि आप अपनी दक्षता को बढ़ाएं। बल्कि उसको बनाए रखने की ज़रूरत भी बहुतों को महसूस नहीं होती है। ये सारी बातें करने का एक ख़ास प्रसंग है।

पिछले दिनों किसी संदर्भ में लगभग एक सौ ऐसे युवाओं से संवाद करने का मौका मिला जो राज्य के विविध सरकारी या निजी विद्यालयों में हिंदी या हिंदी साहित्य पढ़ा रहे हैं। इनमें से कुछ प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक थे तो कुछ माध्यमिक, उच्च माध्यमिक विद्यालयों के। इनके अलावा कुछ युवा ऐसे भी थे जो कहीं भी नियोजित नहीं थे। एक बात सबमें समान थी कि ये हिंदी में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त थे, कुछेक तो पी.एच.डी. प्राप्त भी थे। इनसे बात करके मुझे जो बात सबसे खराब लगी वह यह कि बावजूद साहित्य की विधिवत पढ़ाई करने और उसी के बलबूते पर नौकरी पाने या नौकरी पाने की इच्छा रखने के इनका साहित्य से कोई सजीव और सक्रिय रिश्ता नहीं था। एम.ए. करते वक़्त जो इन्होंने पढ़ा, वही इनके पढ़ने का इत्यलम था। पढ़ाई छोड़ने और अध्यापन करने के पांच-दस बारह-पंद्रह वर्षों में इन्होंने कुछ भी नया नहीं पढ़ा। न केवल नया नहीं पढ़ा, जो पहले पढ़ा था उसे भी याद रखने का कोई ख़ास प्रयास इन्होंने किया हो, ऐसा नहीं लगा। और तब जो पढ़ा, वह साहित्य के आनंद के लिए नहीं, परीक्षा की वैतरणी पार करने के लिए ही पढ़ा। पास बुक्स वगैरह से जैसे तैसे जो पढ़ा, उससे परीक्षा पास कर ली, नौकरी हासिल कर ली, और बस। यह जानना बहुत दुखद था कि ऐसे युवाओं में से अधिकांश ने शायद ही पाठ्यक्रम में सम्मिलित किसी कृति को उसके मूल रूप में पढ़ा हो।

जब बात को आगे बढ़ाते हुए मैंने यह जानना चाहा कि बाद के वर्षों में इन्होंने कुछ भी क्यों नहीं पढ़ा, तो एक सामान्य उत्तर यह मिला कि वे दूर-दराज़ के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत हैं और वहां इन्हें कोई साहित्यिक सामग्री सुलभ नहीं है। इस बात से असहमत भी नहीं हुआ जा सकता। हमारे शैक्षिक संस्थानों और गांवों में पुस्तकालय या तो हैं ही नहीं और अगर हैं तो निहायत ही कुप्रबंधित हैं। ग्रामीण क्षेत्र में किताबों की दुकान की तो कल्पना ही फिज़ूल है। लेकिन क्या हमारे युवाओं को अन्य किसी भी तरह से पठनीय साहित्यिक सामग्री सुलभ नहीं है?

उनसे यह सुनकर मेरे मन में एक सवाल उठा कि ग्रामीण क्षेत्र में सेवा रत रहते हुए क्या वे कभी आस-पास के किसी बड़े शहर में नहीं जाते हैं? क्या उनकी सारी ज़रूरतें अपने गांवों से ही पूरी हो जाती हैं? अगर वे अपनी रोज़मर्रा की अन्य बहुत सारी ज़रूरतों की चीज़ें अपने ग्रामीण इलाके से बाहर के बाज़ार से जुटाते हैं तो पढ़ने-लिखने की सामग्री क्यों नहीं जुटा सकते? क्या इस सवाल का यह जवाब सही है कि इनमें पढ़ने की कोई ललक ही नहीं है? इन्होंने पढ़ाई किसी आनंद के लिए नहीं, नौकरी पाने के लिए की थी। वह मिल गई तो अब पढ़ने की ज़रूरत ही क्या है? यह बात इसलिए भी विश्वसनीय लगती है कि अगर ललक हो तो ई कॉमर्स सेवाओं या अन्य किसी विधि से भी किताबें-पत्रिकाएं प्राप्त की जा सकती हैं। कुछ लोग ऐसा करते भी हैं। जो लोग नौकरी कर रहे हैं वे यह भी नहीं कह सकते कि ऐसा करने में उनकी आर्थिक स्थिति बाधक है। अगर मन हो तो अपने शौक के लिए कुछ खर्चा किया ही जा सकता है। इसलिए यह कहना बेमानी होगा कि किताबें या पत्रिकाएं खरीदने के लिए पैसे नहीं हैं। और चलिये तर्क के लिए यह भी मान लेते हैं कि जेब ऐसा करने की अनुमति नहीं देती। उस अवस्था में एक विकल्प इण्टरनेट का भी है। अब तो इण्टरनेट के विभिन्न मंचों पर विपुल साहित्यिक सामग्री सुलभ है, और उसमें से अधिकांश निशुल्क है। कविता कोश, गद्य कोश, हिंदी समय, रेख़्ता, हिंदवी और न जाने क्या-क्या! इण्टरनेट अब हमारे जीवन का ऐसा अभिन्न अंग बन चुका है कि ये युवा भी उससे वंचित नहीं होंगे। जो युवा वॉट्सएप, फ़ेसबुक वगैरह का खुलकर इस्तेमाल करते हैं वे इस माध्यम से साहित्य भी पढ़ सकते हैं, अगर चाहें। बहुत सारी पत्रिकाएं निशुल्क ऑनलाइन मिल जाती हैं। उन्हें पढ़ा जा सकता है। नॉट नल जैसे ठिकानों पर हिंदी की अधिकांश पत्रिकाएं सुलभ हैं। ई-पुस्तकालय जैसे ठिकानों पर पीडीएफ रूप में अनगिनत पुस्तकें निशुल्क सुलभ हैं। कहने का आशय यह कि ग्रामीण क्षेत्र में होना या आर्थिक साधनों का सीमित होना अब न पढ़ सकने का वैध व स्वीकार्य कारण नहीं रह गया है।

विशेष रूप से मानविकी और कला के विभिन्न विषयों में, जहां हर पल परिदृश्य बदलता है, यह बहुत ज़रूरी है कि जिन्हें इनमें से किसी क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना है वे अद्यतन के सम्पर्क में रहें, और न केवल आज रहें, हमेशा रहें। तभी वे ठीक से अपना कर्तव्य निर्वहन कर सकेंगे। इस दिशा में सक्रिय, संगठित और सामूहिक प्रयास बहुत ज़रूरी हैं।

ये सारी बातें मैं साहित्य के प्रचार-प्रसार के मक़सद से नहीं कर रहा हूं। मेरी चिंता यह है कि जो युवा अगली पीढ़ी को साहित्य पढ़ाने का दायित्व अपने कंधों पर उठाये हुए हैं वे ख़ुद अगर उससे दूरी बरत रहे हैं तो उनसे किस तरह के कर्तव्य पालन की उम्मीद की जाए? सीधी बात यह कि वे ठीक से अपना कर्तव्य पालन नहीं कर रहे हैं। इस बात को बेरोज़गारी के मुद्दे के साथ जोड़कर देखा जाना चाहिए। सरकारी नौकरी, अर्थात अपना काम ठीक से न करने की आज़ादी! क्या इसीलिए हम सरकारी नौकरी चाहते और उसके न मिलने पर हाय तौबा मचाते हैं? जो हाल इन सेवारत युवाओं का है, उनसे बहुत भिन्न हाल उनका नहीं है जो किसी सेवा में प्रवेश पाने के लिए प्रयत्न रत हैं। ऐसे ही लोग, जो किसी भी तरह अपने को योग्य प्रमाणित नहीं कर पाते हैं, नौकरियों और चयन प्रक्रिया में भ्रष्टाचार की बातें करते हैं। मैं नहीं कहता कि सब कुछ सब जगह साफ़ सुथरा है। लेकिन जो इस तरह के दोषारोपण करते हैं उन्हें ख़ुद अपने गिरेबां में भी झांक कर देखना चाहिए। आप नौकरी में आना चाह रहे हैं या नौकरी कर रहे हैं तो आप निरंतर कुछ पढ़ते क्यों नहीं हैं? बिना पढ़े आप अपने काम के साथ न्याय कैसे कर सकते हैं? अगर आपको अपने विषय से कोई लगाव नहीं है तो आप अपने काम के साथ क्या न्याय कर रहे हैं? अगर आप शिक्षक हैं तो अपने विद्यार्थियों को क्या दे पा रहे हैं? क्या इस तरह एक पीढ़ी का निकम्मापन दूसरी पीढ़ी में स्थानांतरित नहीं हो रहा है? और जो अभी नौकरी की तलाश में हैं, वे अगर अभी भी नहीं पढ़ रहे हैं तो नौकरी मिल जाने के बाद पढ़ लेंगे, यह तो सोचना ही व्यर्थ है!

ये सारी बातें करने का मेरा मक़सद हमारी युवा पीढ़ी की मानसिकता के एक अंधेरे पक्ष को उजागर करने का है। बेशक यह पीढ़ी अपने लिए जीवन में बेहतर चाहती है, लेकिन उस बेहतर के लिए किसी भी तरह का प्रयत्न करने से बचती है। हो सकता है उन्हें इसके लिए किसी ने कोई राह न बताई हो। अगर ऐसा है तो यह काम प्राथमिकता के आधार पर किया जाना चाहिए। यहीं यह भी कि मैंने तो चर्चा साहित्य की की है, लेकिन अन्य विषयों में अपने लिए रोज़गार की सम्भावनाएं तलाश करने वाले युवाओं की हालत भी इनसे बहुत अलग नहीं है। विशेष रूप से मानविकी और कला के विभिन्न विषयों में, जहां हर पल परिदृश्य बदलता है, यह बहुत ज़रूरी है कि जिन्हें इनमें से किसी क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना है वे अद्यतन के सम्पर्क में रहें, और न केवल आज रहें, हमेशा रहें। तभी वे ठीक से अपना कर्तव्य निर्वहन कर सकेंगे। इस दिशा में सक्रिय, संगठित और सामूहिक प्रयास बहुत ज़रूरी हैं। ये प्रयास विभिन्न सरकारी संस्थानों के साथ-साथ सम्बद्ध विषयों के स्वैच्छिक संगठनों, ग़ैर सरकारी संगठनों, स्वयंसेवी संस्थाओं और रुचिवान एवं दृष्टि सम्पन्न अकादमिकों द्वारा किए जा सकते हैं। जो हालात हैं हम उनके मूक दर्शक नहीं बने रह सकते!

यहां मैंने जो बातें कही हैं वे मुख्यत: अध्यापन के संदर्भ में है। बहुत सारी नौकरियां ऐसी हैं जिनमें अद्यतन के सम्पर्क में रहना इस तरह ज़रूरी नहीं होता है। अगर आप लिपिक हैं, प्रशासनिक दायित्व निबाह रहे हैं या ऐसा ही कोई अन्य काम कर रहे हैं तो आपसे उस दायित्व की अपेक्षाएं भिन्न होती हैं। लेकिन समय जिस तेज़ी से बदल रहा है उसमें हर दायित्व के संदर्भ में नया जानना और उसको बरतने की दक्षता प्राप्त करना ज़रूरी होता जा रहा है। दुर्भाग्य से, यह प्रवृत्ति हमारे समाज में बहुत कम देखने को मिल रही है।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

205वें जन्म दिवस पर विशेष

महान राष्ट्रवादी, शिक्षाविद एवं साम्प्रदायिक एकता के प्रतीक 'सर सैयद अहमद खां'

आधुनिक भारत के नव निर्माण एवं विकास में सर सैयद अहमद खां का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने अलीगढ़ में 1875 में स्थापित एक मदरसे से शिक्षा की शुरूआत कर 'मुहम्मडन एंग्लो ओरियन्टल कॉलेज' खोलकर एवं बाद में इसी को सन् 1920 में अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के नाम से विकसित एवं स्थापित किया था। जिसमें देश-विदेश की अनेकों प्रसिद्ध हस्तियां उच्च शिक्षा प्राप्त कर निकली थी।

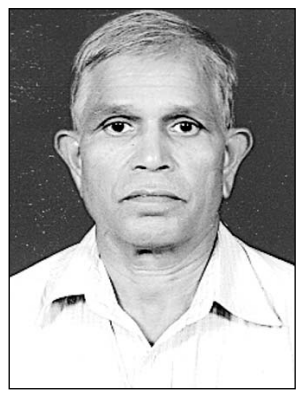

यादरामसिंह यादव

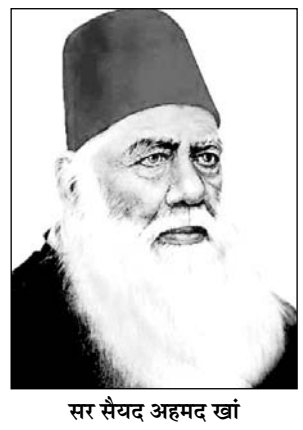

सर सैयद अहमद खां

■ **अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में सूडान, ईरान, फिलीस्तीन, जोर्डन, थाईलैण्ड, कीनिया, नेपाल, बंगलादेश आदि देशों के छात्र भी अध्ययन करने आते हैं**

सर सैयद अहमद का जन्म 17 अक्टूबर 1817 को दिल्ली में हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी में हुयी। कानून की परीक्षा 1941 में उत्तीर्ण करने के बाद उत्तरप्रदेश के शहर मैनपुरी में न्यायाधीश के पद पर नियुक्त हुए। सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता आन्दोलन के समय सर सैयद अहमद खां बिजनौर में नियुक्त थे। इन्होंने अंग्रेजों के अत्याचारों से बहुत दुखी होकर एक पुस्तक 'अतबाबे बगांवते हिन्द' लिखी, जिसमें अंग्रेजी कम्पनी की नीतियों की निन्दा करते हुए इस आन्दोलन का कारण स्वयं अंग्रेजों को बताया था। उन्होंने राजा राममोहन राय, केशवचन्द्र सैन तथा देवेन्द्रनाथ टैगोर के द्वारा किये गये सामाजिक सुधारों का अध्ययन व अनुभव से प्रेरणा लेकर, देश के सामाजिक ढांचे में परिवर्तन करने का संकल्प लिया। उनकी सोच एवं विश्वास था कि पाश्चात्य वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा शिक्षा द्वारा ही मुसलमानों में सुधार हो सकता है।

सर सैयद अहमद खां ने सन् 1864 में सर्वप्रथम गाजीपुर में पहला मदरसा खुलवाया। इसके बाद मुरादाबाद, बिजनौर, फतेहपुर सीकरी, दिल्ली व बनारस आदि स्थानों जहां-जहां वे नौकरी में रहे, में मुस्लिम शिक्षा के लिए मदरसे खुलवाये। उन्होंने अंग्रेजी भाषा के ज्ञान-विज्ञान के खजाने को उर्दू भाषा में लाने के लिए 1864 में 'सांइटिफिक सोसायटी' की स्थापना की। उन्होंने 'अलीगढ गजट' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन भी किया।

सरकारी सेवा से अवकाश प्राप्त करके उन्होंने ऑक्सफोर्ड एवं कैम्ब्रिज जैसी यूनीवर्सिटीज़ की शिक्षा व्यवस्था-संसाधनों के अध्ययन हेतु 1869 में इंग्लैण्ड की यात्रा की। यूरोप में हुए शिक्षा एवं साहित्य के विकास का वर्णन एवं स्वयं के अनुभवों को अपने अखबार में प्रकाशित करते थे। इसके अलावा पत्र में मजदूर किसानों को यूरोप के समान अधिकार दिलाने की अंग्रेजों से मांग करते थे। भारत लौटकर सन् 1875 में एक मदरसा 'तुल-उलूम' स्थापित किया और इसके उपरान्त 18 जनवरी 1877 को 'मुहम्मडन-एंग्लो ओरियन्टल कॉलेज' का नाम दिया। इस कॉलेज के निर्माण में हिन्दुओं ने भी दिल खोलकर दान दिया। कॉलेज की स्थापना में सर सैयद अहमद खां ने अपनी समस्त जमा पूंजी/संसाधन लगा दिये थे। हिन्दुओं से प्राप्त दान के बारे में कहा कि, मैं अपने उन हिन्दू भाईयों के अहसान से कैसे मुक्त हो सकता हूँ, जिन्होंने अपने मुस्लिम भाईयों की दुर्दशा पर विचार कर इस कॉलेज के निर्माण में हजारों रूपयों की सहायता की है।

उन्होंने सन् 1870 में 'तहजीबुल अखलाक' नामक उर्दू में तथा 'निशान्त' हिन्दी में एक मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया था। वह उर्दू को भारतीय भाषा के रूप में मानते थे। उन्होंने 27 जनवरी 1883 को पटना में भाषण देते हुए कहा था कि यह मुल्क हिन्दुतान ही हम दोनों का वतन है। इसकी सेवा से ही हम दोनों जीते हैं। पवित्र गंगा-जमुना का पानी पीते हैं। हिन्दुस्तान की पैदावार हम दोनों खाते हैं। मरने-जीने में हम दोनों साथ हैं। यहां रहते -रहते हम दोनों की रंगत तथा खून एक जैसा हो गया है। मुसलमानों ने हिन्दुओं की सैंकड़ों रस्में अख्तियार की है और हिन्दुओं ने भी मुसलमानों की सैंकड़ों आदतें अपनायी हैं। हम दोनों ने एक नयी जबान उर्दू पैदा कर डाली है।

उन्होंने कौमी एकता के गुरूदासपुर की सभा में 27 जनवरी 1884 को दिये गये अपने भाषण में कहा कि हे हिन्दु-मुसलमानों क्या तुम हिन्दुतान के सिवाय और किस मुल्क के रहने वाले हो, तथा तुम इसी जमीन पर दोनों नहीं बसते, क्या इसी जमीन पर तुम दफन नहीं होते या इसी जमीन के घाट पर जलाये नहीं जाते हो। इसी पर मरते हो और इसी में खाक हो जाते हो। याद रखो हिन्दु-मुसलमान एक मजहबी लफ्ज़ है। हिन्दु-मुस्लिम व ईसाई जो इस मुल्क में रहते हैं एक ही कौम है।

सर सैयद अहमद खां ने मुख्यत: मुस्लिम स्त्रियों को ऊँचा उठाने के लिए 'पर्दा प्रथा' समाप्त करने तथा स्त्रियों की शिक्षा के प्रचार-प्रसार पर विशेष जोर दिया। उन्होंने बहु विवाह एवं तलाक की भी निन्दा की। सर सैयद अहमद खां को देश में "शिक्षा का महात्मा गांधी" कहा जाता है।

उन्होंने अलीगढ़ कालेज के दरवाजे हिन्दुओं की शिक्षा के लिए भी उदारता पूर्वक खोल दिये। सन् 1920 में स्थापित मुहम्मडन एंग्लो ओरियन्टल कालेज ही मुस्लिम यूनीवर्सिटी के रूप में विकसित-परिवर्तित हुआ था। इस विश्वविद्यालय की प्रथम चांसलर एक मुस्लिम महिला 'सुल्तान जहां बेगम' बनायी गयी, जो विश्व की पहली महिला चांसलर थी। इस विश्वविद्यालय में लगभग बीस हजार छात्र-छात्राऐं छात्रावासों में रहकर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। जिसमें भारत के अलावा सूडान, ईरान, फिलीस्तीन, जोर्डन, थाईलैण्ड, कीनिया, नेपाल, बंगलादेश आदि विदेशी छात्र भी अध्ययन करने आते हैं।

सर सैयद अहमद खां की निर्माण प्रतिभा का प्रतिफल, आज का यह जीता जागता अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय है, जिसमें हर जाति, धर्म, सम्प्रदाय व देश के छात्र-छात्राऐं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ से शिक्षा प्राप्त करने वाले कुछ छात्रों व अध्यापकों का उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। रफी अहमद किदवई, शेरे-ए-कश्मीर-शेख अब्दुला (स्वतंत्रता सेनानी), पूर्व राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन, अहमद सईद सत्तारी, अब्दुल गफूर (राजनीतिज्ञ) वसीद अहमद सिद्दकी, डी. डी. कौसाम्बी, प्रोफेसर मो. हबीब, प्रो. नुरूल हसन, सैयद हामिल अली आदि राही मासूमरजा, सहादत हसन मिन्टो, इस्मत चुगताई, कुर्रतुलऐन हैदर (प्रसिद्ध साहित्यकार) हसरत मोहानी, सुहैल इकबाल, लाला अमरनाथ, मुस्ताक अली, गोविन्दा, ध्यानचन्द शकूर, जफर इकबाल तथा गौस मोहम्मद (प्रसिद्ध खिलाड़ी), एन्टार्टिका महादीप की खोज कर सर्वप्रथम तिरंगा झण्डा फहराने वाले जहूर कासिम, नेशनल ओसीनोग्राफी के निदेशक एच.एच. सिद्दकी (भटनगर पुरस्कार प्राप्त) फिल्म निर्देशक-तनवीर अहमद, मुजफर अली, फिल्म कहानीकार जावेद अखतर, राही मासूमरजा, संगीतकार तलक महमूद तथा अभिनय में बेगम पारा, नैना, रेणुका देवी, सैयद जाफरी, खुर्शीद तब्बसुम, नसीरूद्दीन शाह, सलीम जावेद आदि देश की महान हस्तियाँ इसी संस्थान से शिक्षा प्राप्त कर निकले हैं।

उनका निधन 27 मार्च 1898 को अलीगढ़ में 81 वर्ष की आयु में हो गया था। उनकी दिव्यज्योति शिक्षा के रूप में आज भी अमर है। उर्दू के मशहूर शायर 'अल्लाम इकबाल' का लिखा एक शेर उस महान व्यक्तित्व के सम्मान में सटीक बैठता है।

''हजारों साल नर्गिस, अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुस्किल से होता है चमन में दीदावर पैदा।''

सर सैयद अहमद खां ने जो भारत की एकता, ज्ञान विज्ञान, अंग्रेजी शिक्षा, देश का नवनिर्माण तथा धार्मिक सद्भाव में सबसे महत्वपूर्ण योगदान किया है। वह एक प्रखर राष्ट्रवादी एवं सच्चे देशभक्त थे। उनकी शिक्षा की ज्योति से सभी वर्ग रोशन हुए हैं। वह शिक्षा ज्योति उनके स्थापित अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी के द्वारा आज भी अमर है एवं हमेशा जलती रहेगी।

यादरामसिंह यादव,
स्वतंत्र लेखक एवं साहित्यकार

ऑपरेशन राजौरी रक्षक जम्मू एवं कश्मीर के तहत सूबेदार राजेंद्रप्रसाद भांबू जम्मू कश्मीर के राजौरी में उग्रवादियों से को लोहा लेते हुए 11 अगस्त 2022 वीरगति को प्राप्त हुए थे। उनकी बहादुरी के लिए उनकी पत्नी तारमणि देवी एवं छोटे भाई राजेश भांबू को रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह द्वारा इंडिया गेट दिल्ली में सम्मानित किया गया। शहीद राजेंद्र प्रसाद भांबू झुंझुनूं जिले के मालीगांव के निवासी हैं। वर्तमान में उनका पूरा परिवार, छोटे भाई राजेश भांबू के साथ में श्रीगोपाल नगर सिरसी रोड जयपुर में झोटवाड़ा विधानसभा में रहता है। शहीद राजेंद्रप्रसाद भांबू के पिता बदरुराम भांबू भी भारतीय सेना से सेवानिवृत्त हैं। शहीद राजेंद्रप्रसाद भांबू के दो बेटियां और एक बेटा हैं। बड़ी बेटी प्रिया एमएससी बीएड कर रही है।

बिजली चोरों पर ढाई लाख का जुर्माना लगाया

बयाना, (निसं)। कस्बे में लगातार हो रही विद्युत चोरी की घटनाओं को लेकर विद्युत विभाग की टीम ने सतर्कता दल का गठन कर कस्बा सहित ग्रामीण इलाकों में रविवार की अलसुबह कार्रवाई करते हुए 11 स्थानों पर छापे मारे। जहां बिजली चोरी को पकड़ कर बिजली चोरों के खिलाफ बीसीआर भरते हुए ढाई लाख रुपए का जुर्माना लगाया है।

विद्युत निगम के एक्सईएन विवेक शर्मा ने बताया कि लगातार बढ़ रही बिजली चोरी की समस्या से परेशान विद्युत निगम ने टीम गठित कर शनिवार की रात एवं रविवार की अलसुबह कस्बा एवं ग्रामीण क्षेत्रों में 11 स्थानों पर बिजली चोरी पकड़ कर बिजली चोरों के खिलाफ ढाई लाख रुपए का जुर्माना लगाते हुए अवैध कनेक्शनों को काटा है। विद्युत निगम के दस्ते में सहायक अभियंता प्रमोद शर्मा, कनिष्ठ अभियंता पंकज सिंह, ओम प्रकाश शर्मा सहित अन्य अधिकारी और कर्मचारी मौजूद रहे।

35 यात्रियों के साथ जैसलमेर पहुंची पैलेस ऑन व्हील्स

जैसलमेर, (नि.सं.)। पहियों का महल कही जाने वाली शाही ट्रेन रविवार को पहले फेरे में स्वर्णनगरी जैसलमेर पहुंची। 35 देशी-विदेशी सैलानियों के साथ इस ट्रेन का जैसलमेर पहुंचने पर भव्य स्वागत हुआ।

■ **देशी-विदेशी सैलानियों के साथ इस ट्रेन का जैसलमेर पहुंचने पर भव्य स्वागत हुआ**

यात्रियों की राजसी ठाठ-बाट और अत्याधुनिक सुविधाओं का एक साथ अहसास कराने वाली "पैलेस ऑन व्हील्स" रविवार को जब साल के पहले फेरे में जैसलमेर पहुंची तो उसके अंदाज में आमूल बदलाव नजर आये। 35 देशी विदेशी सैलानियों के साथ जैसलमेर पहुंचने पर शाही रेल का ढोल नगाड़ों के साथ भव्य स्वागत किया गया।

जैसलमेर की परंपरा के अनुसार सभी यात्रियों का तिलक लगाकर व माला पहनाकर स्वागत किया गया।

भव्य स्वागत देख सभी यात्री अभिभूत हो गये। यात्रियों का कहना है कि हमारा सफर काफी आनन्दमय है। 7 सितारा होटल जैसा अनुभव हमे इस रेल में मिल रहा है।

यहां का खाना बहुत ही स्वादिष्ट और लाजवाब है और स्टाफ काफी मनमोहक है। सभी यात्रियो ने दिन भर शहर का भ्रमण किया शाम को सम के मखमली धोरों का लुत्फ उठाया।

पहियों को महल कही जाने वाली शाही ट्रेन जैसलमेर पहुंची।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 17 अक्टूबर, 2022

कार्तिक मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2079, पुनर्वसु नक्षत्र मंगलवार प्रात: 5:12 तक, शिव योग सांय 4:12 तक, बव करण प्रात: 9:30 तक, चन्द्रमा रात्रि 10:28 से कर्क राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-मिथुन, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-कन्या, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज कार्तिक संक्रांति, सूर्य तुला में रात्रि 7:22 से प्रवेश करेगा। पुण्य काल दिन 12:58 से आरम्भ होगा। आज कालाष्टमी, अहोई अष्टमी और अरूणोदय काल में मथुरा के राधा कुण्ड में स्नान है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 7:56 तक, शुभ 9:22 से 10:47 तक, चर 1:37 से 3:03 तक, लाभ-अमृत 3:03 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:31, सूर्यास्त 5:53

मेष
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा और आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कर्क
व्यक्तिगत परेशानियों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

धनु
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त हो